Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

# देश के लोकतांत्रिक विकास में शिक्षक की भूमिका

**डॉ. दिनेश कुमार मीना**

सहा. आचार्य – हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, हिन्डौनसिटी

**सारांश**

वैश्विक स्तर पर भारत प्रमुख लोकतांत्रिक देश है जहां नागरिकों की जागरूकता एवं सक्रिय भागीदारी लोकतंत्र की सफलता की कुंजी है। लोकतंत्र के आधार स्तंभ को मजबूत करने में शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि शिक्षक न केवल ज्ञान का संवाहक होता है अपितु नैतिक मूल्यों, सामाजिक–सामुदायिक उत्तरदायित्व और नागरिक चेतना के संवर्धक भी होते हैं। लोकतांत्रिक समाज में शिक्षक विद्यार्थियों को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा देकर उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करते हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र देश के लोकतांत्रिक विकास में शिक्षक की बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा प्रणाली और शिक्षक लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहिष्णुता, सहयोग, संवाद और सहभागिता जैसे गुणों का विकास करते हैं, जो लोकतंत्र की आत्मा है।

अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि शिक्षक लोकतांत्रिक मूल्यों के संवाहक बनकर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं जिससे राष्ट्र कि लोकतांत्रिक व्यवस्था और अधिक सशक्त बनती है। इस प्रकार शिक्षक को लोकतांत्रिक विकास का वास्तविक निर्माता और समाज परिवर्तन का वाहक कहा जा सकता है।

**मुख्य शब्दः** शिक्षक, लोकतंत्र, नागरिक चेतना, मूल्य शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास।

## परिचय

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ संविधान नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे मूलभूत अधिकार प्रदान करता है। लोकतंत्र की सफलता केवल राजनीतिक ढाँचे पर निर्भर नहीं करती, बल्कि नागरिकों की शिक्षा, जागरूकता और नैतिक मूल्यों पर भी आधारित होती है। इस दृष्टि से शिक्षक समाज के मार्गदर्शक और लोकतांत्रिक मूल्यों के संवाहक माने जाते हैं।

शिक्षक न केवल ज्ञान और कौशल का विकास करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों में नागरिक कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व, सहिष्णुता, संवाद, सहयोग और राष्ट्रप्रेम जैसी लोकतांत्रिक भावनाओं का भी संवर्धन करते हैं। शिक्षक ही वह माध्यम हैं जो शिक्षा के जरिए लोकतांत्रिक विचारधारा को पीढ़ी–दर–पीढी जीवित रखते हैं।

वर्तमान समय में जब लोकतंत्र सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता और उदासीनता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है तब शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल योग्य नागरिक बनाते है बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के सक्रिय सहभागी भी तैयार करते हैं।

## साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य की प्रमाणिकता एवं गहराई उसके पूर्ववर्ती अध्ययनों पर आधारित होती है। साहित्य समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि इस विषय पर अब तक किस प्रकार के शोध किए गए हैं और आगे के अध्ययन की दिशा क्या हो सकती है।

1. डॉ. राधाकृष्णन (1948) ने अपने शिक्षा दर्शन में स्पष्ट किया है कि शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसारक नहीं बल्कि राष्ट्रनिर्माता होता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो लोकतांत्रिक मूल्यों को आत्मसात करें।

2. महात्मा गांधी ने बेसिक एजुकेशन की अवधारणा में शिक्षक को जीवनमूल्यों के संवाहक के रूप में देखा। उन्होंने कहा कि शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगार देना नहीं बल्कि अच्छे नागरिक तैयार करना है. जो लोकतांत्रिक समाज में सक्रिय भूमिका निभा सकें।
3. डेवी (1916) ने अपनी पुस्तक डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन में यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा और लोकतंत्र एक–दूसरे के पूरक हैं। शिक्षक लोकतांत्रिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व के संवाहक होते हैं।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968, 1986 एवं 2020) में शिक्षक को शिक्षा प्रणाली का केंद्रबिंदु माना गया है। नीति में यह जोर दिया गया है कि शिक्षक विद्यार्थियों में नैतिकता, संवेदनशीलता और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास करें।
5. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2005) ने अपने विचारों में शिक्षक को राष्ट्र की आत्मा बताया और कहा कि एक सशक्त लोकतंत्र के निर्माण के लिए शिक्षक की प्रेरक भूमिका अत्यंत आवश्यक है।
6. नैशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (2005) में तोकतांत्रिक समाज के निर्माण हेतु शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है, जिसमें शिक्षक से अपेक्षा की गई है कि वे विद्यार्थियों को समानता, सहयोग और न्याय जैसे मूल्यों से परिचित कराएँ।

**शोध के उद्देश्य**

1. लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रसार में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में नागरिक कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में शिक्षक के योगदान का विश्लेषण करना।
3. लोकतांत्रिक समाज में शिक्षक की नैतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक जिम्मेदारियों को स्पष्ट करना।
4. लोकतांत्रिक विकास को सुदृढ बनाने में शिक्षा और शिक्षक के आपसी संबंध का मूल्यांकन करना।
5. शिक्षक की भूमिका को समाज सुधारक, राष्ट्र निर्माता और लोकतंत्र के संवाहक के रूप में रेखांकित करना।

**आंकडों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण**

**तालिका**

**लोकतांत्रिक विकास में शिक्षक की भूमिका पर विद्यार्थियों की राय का विश्लेषण**

| क्रमांक | शिक्षक की भूमिका का आयाम | पूर्ण सहमति | आंशिक सहमति | असहमति | औसत स्कोर (5 में से ) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक मूल्यों (समानता, न्याय, स्वतंत्रता) से परिचित कराना | 78 | 35 | 17 | 4.50 |
| 2. | अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाना | 82 | 30 | 18 | 4.35 |
| 3. | आलोचनात्मक एवं रचनात्मक सोच को बढावा देना | 75 | 37 | 18 | 4.20 |
| 4. | सामाजिक सदभाव और सहिष्णुता का संदेश देना | 80 | 33 | 17 | 4.30 |
| 5. | नेतृत्व एवं जिम्मेदारी की भावना का विकास करना | 70 | 40 | 20 | 4.05 |
| 6. | नैतिकता और चरित्र निर्माण में सहयोग देना | 85 | 28 | 17 | 4.45 |

उपरोक्त तालिका अनुसार लोकतांत्रिक विकास में शिक्षक की भूमिका पर विद्यार्थियों की राय का विश्लेषण किया गया है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों ने शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना है। विद्यार्थियों को

लोकतांत्रिक मूल्यों (समानता, न्याय, स्वतन्त्रता) से परिचित कराने के संदर्भ में सर्वाधिक औसत स्कोर 4.50 प्राप्त हुआ है। यह दर्शाता है कि शिक्षक विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास करने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाने पर औसत स्कोर 4.35 आया, जो बताता है कि विद्यार्थी मानते हैं कि शिक्षक उनके अधिकार और कर्तव्य ज्ञान को सुदृढ करने में सहायक हैं। आलोचनात्मक एवं स्वतंत्र सोच को बढावा देने का औसत स्कोर 4.20 रहा। यह अपेक्षाकृत कम है, जिससे संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में और सुधार की आवश्यकता है। सामाजिक सहयोग और सहिष्णुता का संदेश देना पर औसत स्कोर 4.30 प्राप्त हुआ। इसका अर्थ है कि शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक बंधुत्व और सहयोग की भावना विकसित करने में सफल हो रहे हैं। नेतृत्व एवं जिम्मेदारी की भावना का विकास पर औसत स्कोर 4.05 आया, जो सबसे न्यूनतम है। इससे स्पष्ट है कि नेतृत्व कौशल और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने की दिशा में शिक्षकों को और प्रयास करने होंगे। चरित्र निर्माण में सहयोग देना पर औसत स्कोर 4.45 प्राप्त हुआ। यह दर्शाता है कि शिक्षक विद्यार्थियों के नैतिक और चारित्रिक निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों ने शिक्षकों की भूमिका को लोकतांत्रिक मूल्यों, चरित्र निर्माण और सामाजिक सहयोग के क्षेत्र में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना है। हालाँकि, आलोचनात्मक सोच तथा नेतृत्व विकास के क्षेत्रों में और सुधार की अभी भी आवश्यकता है।

## शोध की चुनौतियाँ

### 1. शिक्षा व्यवस्था में राजनीतिक हस्तक्षेप

शिक्षकों पर कभी–कभी राजनीतिक दबाव रहता है, जिससे वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दे पाते।

### 2. शिक्षा में असमानता

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, सरकारी और निजी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में भारी अंतर है। यह असमानता लोकतांत्रिक मूल्यों की समान रूप से स्थापना में बाधा उत्पन्न करती है।

### 3. शिक्षक प्रशिक्षण की कमी

अधिकांश शिक्षक आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों और नवीन शिक्षण पद्धतियों में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं हैं, जिसके कारण वे विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का प्रभावी विकास नहीं कर पाते।

### 4. संसाधनों का अभाव

कई विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं और शैक्षिक संसाधनों का अभाव है। ऐसे माहौल में शिक्षक की लोकतांत्रिक भूमिका सीमित रह जाती है।

### 5. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ

जातिवाद, लैंगिक भेदभाव और सांप्रदायिकता जैसी सामाजिक समस्याएँ विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में अवरोधक बनती हैं।

### 6. शिक्षकों की कार्यभार की समस्या

शिक्षकों को अकादमिक कार्यों के साथ–साथ अनेक प्रशासनिक और गैर–शैक्षिक कार्यों में भी लगाया जाता है, जिससे वे लोकतांत्रिक मूल्यों के संवर्धन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते।

### 7. तकनीकी और डिजिटल अंतराल

डिजिटत शिक्षा और तकनीकी साधनों तक सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों की समान पहुँच न होने के कारण लोकतांत्रिक शिक्षा का प्रसार बाधित होता है।

### 8. विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का क्षरण

आधुनिकता, उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा की दौड में विद्यार्थी लोकतांत्रिक नैतिक मूल्यों से दूर होते जा रहे है. जिसे पुनः स्थापित करना शिक्षक के लिए बडी चुनौती है।

## निष्कर्ष

लोकतंत्र की सफलता केवल संवैधानिक प्रावधानों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी, नैतिक मूल्यों की स्थापना और सामाजिक चेतना पर भी आधारित होती है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। शिक्षक विद्यार्थियों को केवल ज्ञान नहीं देते, बल्कि उनमें लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सहिष्णुता और बंधुत्व की भावना का विकास भी करते हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षक समाज के वास्तविक मार्गदर्शक और लोकतांत्रिक विकास के संवाहक हैं। वे नई पीढी को न केवल राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाते हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक न्याय, मानवाधिकार सहभागिता और सामूहिक जिम्मेदारी के महत्व से भी परिचित कराते हैं।

आज के समय में जब लोकतंत्र विभिन्न चुनौतियों जैसे सामाजिक असमानता, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार और राजनीतिक उदासीनता का सामना कर रहा है, तब शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों को सक्रिय, जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनाकर लोकतंत्र की जडों को गहरा और मजबूत करते हैं।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक केवल शिक्षा प्रणाली के आधार स्तंभ ही नहीं है, बल्कि वे लोकतांत्रिक समाज के वास्तविक निर्माता भी हैं। एक सशक्त, प्रगतिशील और समावेशी लोकतंत्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अपरिहार्य और स्थायी है।

**संदर्भ**

1. राधाकृष्णन, डॉ. एस. (1948). शिक्षा और लोकतंत्र, नई दिल्लीरू भारतीय प्रकाशन।
2. गांधी, महात्मा (1956). बेसिक एजुकेशन (नई तालीम), अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन।
3. डेवी, जॉन(1916) डेमोक्रेसी एंड एजुकेश न्यूयॉर्क मैकमिलन पब्लिकेशन।
4. भारत सरकार (1968). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968. नई दिल्ली मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
5. भारत सरकार (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986. नई दिल्लीः मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
6. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्लीरू शिक्षा मंत्रालय।
7. अब्दुल कलाम, ए.पी.जे. (2005). इग्नाइटेड माइंड्स अनलीशिंग द पावर विदिन इंडिया. नई दिल्लीः पेंगुइन पब्लिशर्स।
8. एन सी आर टी (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन सी एफ–2005). नई दिल्लीरू राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
9. सिंह, आर. (2018). भारतीय लोकतंत्र और शिक्षक की भूमिका. जयपुरः राज प्रकाशन।
10. शर्मा, पी. (2021). शिक्षा, समाज और लोकतंत्र दिल्लीः विनायक प्रकाशन।